भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 25 अंक : 6 | 26.11.2002, मंगलवार (नवम्बर-दिसंबर) | वार्षिक चंदा : 50.00

स्वर्णशिविर के पंडाल से– 'भोजनम् ज्ञानामृतम्'

[30 मार्च '02, सायं]

पू. निर्मलस्वामिजी

... गोंडल– अक्षरमंदिर में घनश्याम महाराज के पास योगीजी महाराज काकाजी को ले गए। काकाजी को घनश्याम महाराज के पास खड़े रखा। योगीजी महाराज ने धून करी... घनश्याम महाराज के चरणार्विंद को दो हाथों से चरण स्पर्श करके योगीजी महाराज ने दो हाथ जोड़ कर प्रार्थना करी कि दादुभाई साहेब को अक्षरधाम में दिव्य देह से - तेजस्वी रूप से सुख दो। तो, दस मिनिट के अंदर काकाजी समाधि में चले गए। योगीजी महाराज ने एक घंटे धून करी और काकाजी वहीं के वहीं समाधि अवस्था में चले गए। योगीजी महाराज नीचे आए, काकाजी 72 घंटे तक घनश्याम महाराज के पास समाधि अवस्था में वहां ऊपर रहे। योगीजी महाराज के नीचे आने के बाद सभी ने पूछा कि दादुभाई को क्या हुआ ? तो, योगीजी महाराज सभा मंडप में जब बैठे थे, तब योगीजी महाराज इतना ही बोले कि 'भगवान स्वामिनारायण, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज और शास्त्रीजी महाराज के साथ दादुभाई अक्षरधाम में विराजमान हैं, तुम कोई नहीं देखते, मैं देख रहा हूँ'– इतना योगीजी महाराज बोले।

हम सब बहुत भाग्यशाली हैं कि साक्षात्कार स्वर्णजयंती पर्व पर हम सभी के बीच स्वामिजी विराजमान हैं। स्वामिजी दिव्य पुरुष हैं। हमारे लिए काकाजी गए ही नहीं हैं। आज जब साक्षात्कार स्वर्णजयंती मना रहे हैं, मैं तो इतना ही कहूँगा कि गुरुजी द्वारा काकाजी साक्षात् विराजमान हैं और काकाजी का जो कार्य है, वो गुरुजी बहुत बढ़ा रहे हैं। **गुरुजी हमारे एक मित्र के रूप में हैं,** लेकिन **एक छोटे भाई के रूप में** भी हैं, हमारे पूज्यनीय हैं। गुरुजी के जीवन के प्रसंग देखें, खूब नज़दीक से निहारें तो गुरुजी का जीवन और हलन-चलन जो है, वो चौबीस घंटे काकाजीमय है। आज हम देख रहे हैं, काकाजी हमारी सभा में साक्षात् विराजमान हैं, ऐसा हमारी सभा में दर्शन हो रहा है। हमारी सभा में आध्यात्मिकता का भरपूर दर्शन हो रहा है। **हमारी सभा में दिव्यता का-निर्दोषता का दर्शन हो रहा है। हमारी सभा दिव्य भी है और भव्य भी है।** काकाजी के कई सूत्र थे– काकाजी के कई आदेश भी थे। काकाजी जिस तरीके से जिवाना चाहते थे, उनके कई खूब गहरे रहस्य हैं और उस तरह हम सब जीवन जी भी सकते हैं। परंतु हम कई प्रकार की भूलें करते हैं, हम कई प्रकार के आदेशों पर चल सकते नहीं, लेकिन काकाजी इस प्रकार जीवन जी गए हैं। स्वामिजी भी साथ थे, पप्पाजी भी साथ थे।

ये कई प्रसंगों में काकाजी के साथ खूब लाभ मिला है। कितनी बार काकाजी के साथ गाँवों में घूमे हैं। काकाजी जब घांडला में योगीजी महाराज के साथ थे, मेरी उम्र बहुत छोटी थी; योगीजी महाराज को हम पानी देने स्टेशन गए थे। तो, योगीजी महाराज ने कहा कि इन बच्चों को घुमाने के लिए साथ ले लो। हमारे पास पहनने के दूसरे कपड़े भी नहीं थे, तो योगीजी महाराज ने आज्ञा करी कि दादुभाई साहेब ये बच्चों को तुम्हारा कुर्ता और धोती पहनने के लिए देना। अब कहां हमारी उम्र और कहां काकाजी के कपड़े ? लेकिन वर्षों से काकाजी के साथ रहने का लाभ मिला। आज भी हम सभा में देख सकते हैं कि काकाजी

साक्षात् हमारी सभा में विराजमान हैं। काकाजी का हमें दर्शन होता है। काकाजी की दिव्यता का हमें दर्शन होता है। तो आज हम भगवान स्वामिनारायण को – गुणातीत स्वरूपों को प्रार्थना करें कि काकाजी जिस प्रकार जीवन जीवाना चाहते थे, उस प्रकार हम जीवन जी सकें।

पू. वशीभाई

... जब साक्षात्कार हुआ तो काकाजी ने महिमा का घटस्फोट किया। तब तक महिमा विदित-प्रसर नहीं रहा था। अभी एक प्रसंग बताया कि 'भगत' जो होता है, उसको खाना – संतों से अलग बाहर लेना पड़ता है। 'भगत' जब लंच ले, तो उसका पत्तर कोई धुलाए तभी धुल सकता है। तो, खाना खाने के बाद उसका पत्तर कोई धुलाने नहीं आ रहा था, पाँच मिनिट गई-दस मिनिट गई। योगी बापा खुद आए और उन्होंने दोनों का–निर्मलस्वामी और मंहतस्वामी भगत थे– उनका पत्तर साफ करवाया... 'भगत' लोग को सब आगे लेते थे। कोई भी हरिभक्त आता तो कहता– 'इसके पांव दबाओ, भगत ! चलो ये साफ कर दो, ये शौचालय साफ कर दो।' सब जो हल्के हल्के काम होते है, वो भगत लोगों को ! धे आर लाईक– यू नो बाऊंडेड लेबर कि उनको कुछ भी काम बोल सकते हैं, कुछ भी कह सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में निर्मलस्वामी ने दीक्षा ली और आज भाग्य है; गुरुजी को तो बहुत-बहुत धन्यवाद कि– ही इज़ धी फोर्थ दीक्षार्थी फ्रोम योगीजी महाराज। पहले बालमुकुंदस्वामी को दीक्षा दी थी, दूसरे एक साधु और चौथे साधु इनको बनाया था। तो, हमारा बड़ा भाग्य है दिल्ली का – दिल्ली मंडल का कि ऐसे संत आज यहां हाज़िर हैं। साधुता में पचास साल ऐसे रहना; साधुता की बात ही अलग–साधुता तो आँख में से पहचानी जाए। ऐसे साधु का भी पचास साल और ये पचास भगत आ गए। पचासवीं स्वर्णजयंती और पचास भगत ! काकाजी बहुत खुश होते होंगे कि हमारे साक्षात्कार में ऐसे नए-नए संत भी पचास आ गए। स्वामिजी को भी धन्यवाद कि ऐसे पचास संत लोग को लेकर साक्षात्कार दिन मनाने के लिए आ गए।

काकाजी के साक्षात्कार की घटना स्पीरिच्युअल इतिहास में बड़ा मायने रखती है। क्यों ? क्योंकि तब तक जो स्पीरिच्यूअलीटी थी, वो सीमित जैसी थी। महाराज आए, स्वामिनारायण भगवान आए–परमहंसों के साथ रहे, पर पहचाने नहीं गए; गुणातीतानंदस्वामी की भी पहचान नहीं हुई। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने वो करवाई। लेकिन जो रियल स्पीरिच्यूअलीटी थी, वो खुल कर बाहर नहीं आती थी। इसलिए काकाजी बहुत बोलते थे कि योगी बापा ने ब्राह्मीस्थिति को खुल्ली रख दिया, खुल्ले मैदान में रख दिया। कोई भी भगवान को भज सकता है। कोई भी भगवान के प्रति आस्था रख कर उसको भजने के लिए आगे बढ़ सकता है। आध्यात्मिकता को यूं खुल्ले आम करने की यह एक जबरदस्त घटना थी।

नए-नए पार्षद लोग आए हैं-भगत लोग भी हैं। मुझे मालूम नहीं है कि दिनकरभाई ने ये साक्षात्कार की बात बताई या नहीं। लेकिन मैं थोड़े में बताता हूँ कि शास्त्रीजी महाराज 1950 में स्वधाम गए। उस समय नंदाजी थे– जो बाद में दो बार प्राईममिनिस्टर हुए। वो कुछ नहीं थे, मज़दूर यूनियन के लीडर थे और शास्त्रीजी महाराज ने उनको आशीर्वाद दिए थे कि आप दो बार प्राईममिनिस्टर बनोगे। पहले जब आशीर्वाद दिया कि आप प्राईममिनिस्टर होंगे, तो कोई हँसा– अपने गुजराती में कहते हैं ना कि ये तो लल्लू-टप्पू है। मतलब कि ये तो हो नहीं सकता। तो शास्त्रीजी महाराज बोले कि दो बार होगा, एक बार नहीं ! वो आशीर्वाद को फलीभूत करने के लिए– योगीजी महाराज को ये था कि शास्त्रीजी महाराज ने बोला है तो वी मस्ट ओबे धेट, वी मस्ट बीलीव इन धेट। काकाजी को उसमें निमित्त बनाया।

उस टाईम पर काकाजी का तो बड़ा बिजनेस था। मल्कानी साहेब को पता होगा कि व्हेन यू आर सी.ओ. एन्ड मेनेजिंग डाइरेक्टर ऑफ ए फर्म, वेन यू आर साईनिंग सो मेनी चेक्स, सो मेनी थिंग्स आर हेपनिंग एट योर कमांड– उस टाईम पर आपको कोई बोले कि जाओ आप जाकर नंदाजी का चुनाव लड़ो और नंदाजी का चुनाव लड़ना, उसका स्पीरिच्युअलीटी के साथ क्या मायने ? फिर भी उस समय अपनी बुद्धि को– काकाजी तो वेरी इन्टेलीजेन्ट, ही हेज़ स्टडीड इन लंडन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स इन धोज़ डेईज़ ! अभी एक लड़का था जिसको गुरुजी ने जनोई दिया था, वो बोला कि उसको एम.बी.ए. करना है, मैं उसको बोला कि तू लंडन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स में जाकर ही एम.बी.ए. करना– काकाजी की प्रसादी की स्कूल है। पर, उस टाईम पर कि जब बोलना भी मुश्किल था कि लंडन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स जाकर पढ़ें; वहां पढ़ क आया प्रतिभा संपन्न आदमी– उसको कोई बोले कि आप जाकर चुनाव लड़ो। वो भी जहां शौचालय की व्यवस्था नहीं, बाथरुम की भी व्यवस्था नहीं और काकाजी तो सेवॉय होटल में रहे हुए ! उनको तो इंगलिश टॉयलेट चाहिए। अपने को तो ये जमाने में अभी चाहिए, लेकिन ये वो जमाने की बात है। तो योगीजी महाराज के वचन पर उन्होंने वो सब छोड़ कर– पहले तो बोले कि जीप भेज दूं, गाड़ी भेज दूं। तो योगी बापा बोले कि वो नहीं चलेगा, यू हेव टु गो पर्सनली– बीकोज़ इट्स ए बिग डील। यू हेव टु ब्रेक

आईस। क्योंकि उसके सामने बड़ा महाराजा खड़ा था। तो यू हेव टु कन्वर्ट प्रॉब्लेम एट योर एपोर्च्युनीटी एण्ड धेट वॉज़ काकाजी ! एकदम ऐसा था कि जीत ही नहीं सकें। वो चेलेंज काकाजी ने ले लिया और उसको भी भजन-भक्ति रूप में बदल कर रख दिया।

एक शंकर भगत करके था– उसकी नई-नई शादी हुई थी। अभी ये तबला बजाता है ना ? वो ऐसे बजा कर लोगों को इकट्ठा करता था और काकाजी बात करते थे कि जैसे ये शंकर भगत है, जो भगवान के नाम से है, ऐसे ये नंदाजी 'नंदलाला' है। नंदलाला को तुम वोट दे देना, उसके ऊपर तुम ठप्पा मार देना और वो चुनाव जीता ! चुनाव का रिज़ल्ट निकलने को आया, तो इन धी फर्स्ट टु-थ्री कांऊटिंग ही वॉज़ ट्रेलिंग बीहाईन्ड। नंदाजी तो अमदावाद चले गए और बोले कि मालूम नहीं क्या होगा ? आई एम जस्ट लूज़िंग... लेकिन काकाजी को विश्वास था, काकाजी की जबरदस्त निष्ठा थी, काकाजी को इतनी जबरदस्त खुमारी थी कि योगीजी महाराज ने जो बोला है, वो होने ही वाला है– कुछ भी हो जाए। तो उन्होंने धून किया और नंदाजी 56000 वोट से जीते भी ! जीतने के बाद योगीजी महाराज ने काकाजी को– जैसे अभी निर्मलस्वामी ने बताया कि गोंडल बुलाया 3 फरवरी– रविवार का दिन था। सुबह में घनश्याम महाराज को प्रार्थना करी और ये पूरा साक्षात्कार हुआ।

लेकिन इनकी महानता ये है कि जब ये साक्षात्कार हुआ तो हमारी दूसरी मंजिल पर अक्षयभाई रहते हैं, वो बोलते हैं कि नीचे काकाजी की बारह गाड़ी खड़ी रहती थी। ड्राईवर सोचता था कि बोस कौन-सी गाड़ी में जाएगा ? और उस समय जीने पर भी इतनी लाईन लगती थी, इतनी पॉवर थी काकाजी कि जो पेन दे और उस पेन से साईन करे तो वो चेक पास हो जाए। पानी दे तो उसकी बीमारी मिट जाए– पॉवर सियर पॉवर। पारसी लोग आते थे सब। कांतिकाका ने बताया था कि योगीजी महाराज ने एक शाल दी थी कि जब बहुत पॉवर आ जाए, तो उनको ये शाल ओढ़ा देना। लेकिन ये पॉवर को दबा कर वापिस योगीजी महाराज को वे बोले कि आपकी क्या योजना है ? आपका क्या डिवाईन प्लान है ? योगीजी महाराज ने तभी बताया कि– स्वामिनारायण संप्रदाय में बहनें– जो आज तो खुल कर भगवान भज सकती हैं, भगवान का नाम स्मरण करके ब्रह्मस्वरूपीणी हो सकती है, वो अवेलेबल नहीं था। तो, बोले कि वो करना है और 51 पढ़े-लिखे युवकों को साधु करना है। तब तक तो निर्मलस्वामी ने अभी बताया वैसे योगीजी महाराज के टाईम पर क्या होता था कि एक साधु होता था, दूसरा चला जाता था... **काकाजी ने बाद में महिमा गाई कि** आप जो बोल रहे हो – **योगीजी महाराज ओर्डिनरी साधु नहीं है, वो भगवान है-भगवान का स्वरूप है। तुम उसको मानोगे तो निहाल हो जाओगे। वो खुल्ले आम बोलने लगे**– सब को बोलने लगे और उसकी वजह से ये इक्यावन युवकों को दीक्षा देनी थी, वो हुआ। **सारे गुणातीत समाज का सर्जन बाद में हुआ– वह सब को मालूम है।**

चौदह साल में जो घटना घटी है, एक-एक दिन वॉज़ लाईक ए वन-वन ईयर ! एक बार हम पप्पाजी की तबियत देखने गए थे– आणंद में, और पप्पाजी को बोला कि यह क्या लीला है ? तो **पप्पाजी** ने बस थोड़ी बात करी, फिर बाद में बोला कि **'हम 52 से 66 तक जो जिए, वो जिए...।'** अब **ऐसे देखें तो 52 से 66 तक का जो जीना था, वो एकदम भीड़ा (कसनी) वाला था।** कोई सुविधा नहीं थी, कोई ठहरने की व्यवस्था नहीं... काकाजी जब विचरण से आते थे, तो योगीजी महाराज का पोष्ट कार्ड पड़ा होता था कि तुम वापिस आ जाओ। अभी तो आए नहीं हैं और दूसरा बुलावा इमीजिएटली। बिजनेस सब चौपट हुआ ! **खुद का सब याहोम करके काकाजी ने ये किया है। तब ये गुणातीत समाज खिला है... यूं काकाजी ने ये पूरी बात सिखाई कि ये गुणातीत पुरुष, भगवान जब पृथ्वी पर आते हैं, तब उसके साथ संबंध करके उसकी पूरी योजना में लय-लीन हो जाना, वो काकाजी ने सिखाया...**

68 में– योगीजी महाराज तो दादर थे और काकाजी ताड़देव थे; कोई फिज़ीकल कोन्टेक्ट भी नहीं था। 1968 में योगी बापा ने सकंल्प किया कि दिल्ली का काम करो, दिल्ली में मंदिर करना है। दिल्ली चौसठ बंदरगाह का स्थान कहा जाए, दिल्ली में अपना मंदिर होना चाहिए। अभी वो बात यहां तो किसी ने बताई नहीं थी, पर काकाजी यहां बोलते हैं कि मुकुंदस्वामी आप दिल्ली जाओ, दिल्ली जाने का प्रोग्राम बनाओ। सब को लगे कि इधर क्या है ? कोई माहौल नहीं है, कोई तैयारी नहीं है, कोई संकेत नहीं है। छः महिने गुरुजी यहां रहते थे, वापिस चले जाते थे। रहने का कोई बंदोबस्त नहीं, ठण्ड भी पड़े ! यहां गर्मी भी खूब पड़े। अभी मार्च के महिने में ऐसा है कि गर्मी सहन नहीं होती, तो जून में तो यहां– गुजराती में कहें कि भेजा फट जाए– ऐसी यहां गर्मी पड़े। ऐसे में कहां सत्संग कराएं ? ऐसे में काकाजी को क्या दिखाई देता होगा ? काकाजी का दूसरा क्या   था कि कोई कुछ भी बोले, योगीजी महाराज जो बोलें या उनको जो प्रेरणा हुई हो, ही विल गो फॉर ईट। च कुछ भी हो जाए। वो गुरुजी ने बहुत अच्छी तरह दिखाया है। गुरुजी ने जो काकाजी को ये माना है, वो बहुत-बहुत बड़ी बात है। ही हेज़ बिलीव्ड, काकाजी टोटली– सुप्रीमली–मैग्नीफिशियन्टली। वो टाईम पर कोई नहीं होता था, उन्होंने ये दिल्ली का बीड़ा उठाया। पूरे जोश से ये किया। **महाराज के टाईम पर गुणातीतानंदस्वामी को बोला कि जूनागढ़ जाने वाला कोई नहीं है– ऐसे दिल्ली का काकाजी ने उठाया योगीजी महाराज की जो मर्जी थी-योगीजी महाराज की जो इच्छा थी, योगीजी महाराज के थ्रू जो आता** ..,

उस पर कितनी भी कठिनाई आए काकाजी उठा लेते थे। बाद में क्या होता था कि 72-73 तक तो गुरुजी को बहुत आना-जाना पड़ता था। गुजरात में भी समैया-फंक्शन होते और यहां भी होते थे। तो ऐसा तय हुआ कि उसे वहीं रखो। परंतु, यहां तो कोई नहीं, कोई सेवा नहीं, कोई इन्कम नहीं, कोई मेनेज़्मेन्ट नहीं। सब लोग ऐसे बोलते भी थे– क्या फायदा है ऐसे सेन्टर चलाने का ? नौबत यहां तक आ गई कि वो सेन्टर अभी फिलहाल तो बंद कर दो। लेकिन काकाजी ने किसी का अभाव ही नहीं लिया – जिसने यह बोला उसका भी नहीं ! ही बिलीवड कि ये योगीजी महाराज का संकल्प है और ये करना है और ये उन्होंने किया !

तो आज हम बहुत-बहुत भाग्यशाली हैं और जैसे गुरुजी ने काकाजी को माने वैसे मैं देखता हूँ कि यहां के भक्त लोग भी इतना मानते हैं। मैं यहां के छोटे-छोटे बच्चों को भी ऐसा देखता हूँ। वर्ना दिल्ली के संजोग गुजरात की तरह का नहीं हैं कि सत्संग करने में इतनी सवलियत हो। ये भक्त लोगों को रियली धन्यवाद है। अनिलजी ने बीस दिन में फटाफट ये गेट जो बनवाया, हमारे बच्छराजजी ने उनका एक लड़का सेवा में दे दिया है, जनार्दनभाई ने उनका लड़का– जब अचानक भाईस्वामी ने शरीर छोड़ा तो क्या करें ? तो खुद के लड़के दे दिए। गुरुजी ! कोई बात नहीं, आप इसे साधु करो ! कितनी बड़ी बात है ये ? प्रभाकरजी का बेटा– वो भी मणी जैसा साधु है। इसमें– **सच में धन्यवाद आनंदी दीदी को भी है क्योंकि उन्होंने ये गृहस्थ लोगों को संभालने का, बच्चों को प्रेम देने का, बहनों को प्रेम देने की ये बड़ी भक्ति करी है।** तो, ये जो आध्यात्मिकता की एक नई चिंगारी फूटी है कि भगवान का स्वरूप ये पृथ्वी पर है, तो उसके डिवाईन प्लान में-उसकी योजना में हम राजी कर लें– वो सुप्रीम थिंग है।

आज दिनकरभाई भी यहां हैं। अभी तो वहां भी बहुत सवलियत है, पर जब काकाजी वहां शिकागो जाते थे तो दो सौ-दो सौ, तीन सौ-तीन सौ माईल जाते थे– सत्संग के लिए ! वहां दो घंटे की सभा के लिए पाँच घंटे का ड्राईव ! पाँच घंटे आने के और पाँच घंटे जाने के ! तो आज वहां कितने नए-नए लड़के लोग आते हैं ! एक लड़का है उसका तो एंगेजमेन्ट हुआ था, वो बोलता है मुझे शादी नहीं करनी है, मुझे ये मार्ग पर चलना है। ये भाव जागना कि मुझे भगवान भजना है– ये धन्यवाद है। अभी आज के जमाने में कोई बोले कि मैं मरने को आया हूँ, मैं युद्ध करने को आया हूँ–स्वामिजी ऐसों पर खुश होते हैं। स्वामिजी इसलिए अपने दिल से इनको लाए हैं। ये भावना के साथ स्वामिजी ये बड़े-बड़े पार्षदों को लाए हैं। निर्मलस्वामिजी ने बताया कि काकाजी प्रगट हैं। कोठारीस्वामिजी भी हैं। हम खूब-खूब भाग्यशाली हैं और सबको प्रार्थना करनी है कि आज आप ऐसे बरसो जैसे काकाजी हमेशा बोलते थे– 'अब तक का तुम्हारा सब माफ-अब से नया जन्म और अभी से चालू कर दो।' अभी कल साहेब का जन्मदिन भी बहुत प्रार्थनामय, बहुत भक्तिमय माहौल में मनाया। वहां ऐसा एरेन्जमेन्ट किया था कि एक युवक स्वरूपों का पूजन करता है, तो दूसरा प्रार्थना पढ़ता है। ऐसा प्रार्थनामय वातावरण, पूरा मंगलमय वातावरण हुआ था। भले अभी भारत में प्रॉब्लम्स है, अभी अमदावाद में प्रॉब्लम है। लेकिन, काकाजी ने बताया है कि यहां से जो ज्योत निकली है, ये जो सिलसिला चालू हुआ है, वह बहुत-बहुत बढ़ने वाला है। और हम विटनेस है, हम लोगों से ये शुरुआत होने जा रहा है। सो हम लोग काकाजी की ये ज्योत आगे से आगे बढ़ाएं और काकाजी की जो भावना थी कि सब इकट्ठे होकर एक-दूसरे का जचाँ कर, सुहृद्भाव से बढ़ाएं। 'सुहृद्भाव' बहुत मुश्किल है। स्वामिजी ने और साहेब ने ये मंत्र शताब्दी में कहा है कि भजन करते-करते क्रिया करो। गुरुजी भी सबको लिख कर देते हैं– वो ओ.पी. अग्रवाल को भी लिख कर दिया– एक कार्ड मैंने पढ़ा था कि– हमें हमारा संसार भी भगवानमय कर देना है। उठते, खाते, पीते, बैठते, ऑफिस में जाते हैं, कुछ काम करते हैं– 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण'– पाँच मिनिट भगवान के नाम का नमक डाल कर - नाम लेकर ही करना है।

तो हम खूब-खूब भाग्यशाली हैं कि ऐसे दिव्य पुरुष के सब आशीर्वाद काम करते हैं। निर्मलस्वामी बोलते हैं कि मैंने जब दीक्षा ली तो मेरी उम्र दस-बारह साल की थी। मुझे मालूम ही नहीं कि ये दीक्षा क्या है ? तब तो सबको जल्दी साधु बना देते थे। सब बड़े-बड़े संत आते और कहते– बापा इनको भागवती दीक्षा दे दो। दीक्षा समझदारी से नहीं लेते थे। बापा का कैसा नेचर था कि किसी को ना नहीं बोलते थे और दीक्षा लेने वाले को बाद में कोई भी साधु उसे अपने साथ ले जाते थे। पर, निर्मलस्वामी को बापा के साथ रहना था, उनको बापा की सेवा करनी थी और सब कहने आए कि बापा– इनको भागवती दीक्षा दे दो। बापा बोले कि तुम सब शाम को आओ। सब आए तो बापा बोले कि रहने दो, इसका फिर देखेंगे-इसको गोंडल में दीक्षा देंगे, सारंगपुर में नहीं। भागवती दीक्षा मिलती है, तो उससे स्टेटस बढ़ता है। लेकिन वो छोड़ कर– निर्मलस्वामी बोलते हैं कि – मुझे इसमें (सफ़ेद कपड़ों में) ही रहना है; क्योंकि मुझे बापा के पास रहना है। वे बोलते हैं कि मुझे बापा के आशीर्वाद मिल गए और कहते हैं कि मुझे ट्रंक भर कर बापा ने काग़ज़ लिखे होंगे। गोंडल में कोठार में कोई नहीं था, तो मैं गोंडल में कोठारी बना और दो-दो घंटे बापा मेरे पास आकर बातें करते थे, हमारा घड़तर करते थे। कोई आए तो कैसे बुलाना, कैसे बिठाना, कैसे मंदिर संभालना, सारी सूझ योगी बापा देते थे। **गुरुजी ने भी यहां ऐसा माहौल तैयार किया है कि संसार में हैं, गृहस्थ में हैं, साधक में हैं या साधु में हमें जीवन कैसे जीना चाहिए ?**

...काकाजी ने क्या किया है कि सब टाईप का दुकान खोल दिया है। तुमको जो पसंद आता है,

अच्छा लगता है, वहां आनंद करो। लेकिन गम में नहीं रहो, दुःख में नहीं रहो, शोक में नहीं रहो। तो, काकाजी को आज यही प्रार्थना है कि हे काकाजी आपका दिव्य ऐसा साक्षात्कार दिन है– बहुत बड़ी घटना है। आपको जो साक्षात्कार हुआ, उसका तो अभी हमें मालूम ही नहीं है। क्योंकि सागर में मछली तैरती है और बड़ा ज़हाज़ चला जाता है। मछली को नहीं मालूम कि ज़हाज़ कितना बड़ा है ?– यह सब स्वामी की बात में लिखा है। क्योंकि वह अलग योनि है– **गुरुजी बोलते हैं कि काकाजी और हमारी योनि ही अलग है। धे मच-मच डिफर, वी डोन्ट नो ईट !** तो आज के दिन यही प्रार्थना है कि काकाजी आपका स्वरूप तो अज्ञेय है–आप कृपा करके – हे पप्पाजी, हे स्वामिजी, हे दिनकरभाई, हे गुरुजी, हे निर्मलस्वामी, हे कोठारीस्वामी हम गलती ना कर बैठें– आप हमारे जैसा खाते हैं, हमारे जैसा पीते हैं-हमारे जैसा बर्ताव करते हैं, तो हम भुलावे में नहीं आ जाएं – आप भगवान का स्वरूप हैं, आपका जो तत्त्व, 'जन्म-कर्म च मे दिव्यं'– जो गीता में लिखा है– यूं आपका सब चरित्र हम दिव्य करके गाएं, वो ही आज साक्षात्कार दिन की काकाजी को प्रार्थना करें !

पू. कोठारीस्वामिजी

... दूसरे अर्थ में कहें तो प्रभुभक्ति और गुरुभक्ति दिन मना रहे हैं। काकाजी ने ऐसी प्रभुभक्ति-गुरुभक्ति करी, जिसके फलस्वरूप बापा ने अक्षरधाम के दर्शन कराए और उनके रूप बना दिया– वह यह दिन ! यह दिन हमें प्रेरणा दे जाता है कि प्रभुभक्ति और गुरुभक्ति में लीन हो जाओ। वशीभाई ने हमें बताया कि काकाजी कंपनी के कितने बड़े डायरेक्टर थे। लेकिन गुरुभक्ति करनी थी, तो सब कुछ एक ओर रख दिया। **ऐसी गुरुभक्ति करने के लिए– उस मार्ग पर चलने के लिए आज का दिन है।** गुरुजी ने भी ऐसी गुरुभक्ति करी। जब गुरुजी यहां आते, गुरुजी तो काकाजी की आज्ञा से यहां पधारते। लेकिन साथ आते संत को पूछें तो ख्याल पड़े– यहां की विषमता का। यहां कोई था नहीं तब गुरुजी आते थे। कोई आने वाला भी नहीं था। उस समय काकाजी को राजी करने के लिए गुरुजी यहां चार महिने-छः महिने रहते। **गुरुजी का जीवन देखें तो उन्हें अकेले रहना तो जँचता ही नहीं। अकेले सोना नहीं जँचे, खाने को नहीं जँचे, रहने का नहीं जँचता-पर उस समय कोई नहीं था, फिर भी वह गुरुभक्ति अदा करी।** काकाजी के जीवन को देखें, हर समय प्रभुभक्ति और गुरुभक्ति का सूरज चमकता। बापा-बापा-बापा, महाराज और बापा – शास्त्रीजी महाराज उनके प्राण थे।

काकाजी खुद जहां बैठते थे, वहां एक सूत्र रखा था। जैसी परोक्ष देव में प्रतीति है, वैसी गुरुहरि के प्रति हो जाए, तो सब कुछ सिद्ध हो जाए। 'जो धाम में हैं वही पुरुष यहां विचरण कर रहे हैं'– ऐसा काकाजी सम्यक् रूप से मानते थे। काकाजी हमेशा किसी को आशीर्वाद लिखते तो उसमें दो वचनामृत खूब लिखते–प्रथम का सोलह और अंत्य. का ग्यारहवां वचनामृत– ये दो वचनामृत काकाजी लिखते। फिलहाल स्वामिजी ये दो वचनामृत तो देते ही हैं। उसमें मध्य का इक्कवीसवां वचनामृत स्वामिजी और देते हैं। उसका काकाजी के जीवन में सांगोपांग दर्शन होता था। जैसी परोक्ष भगवान के प्रति महिमा है और परोक्ष संत के प्रति महिमा है, परोक्ष के भक्त की जैसे महिमा है, ऐसी प्रत्यक्ष संत की महिमा हो, तो सभी अर्थ सिद्ध हो जाएं। **जैसे प्रभु, वैसे प्रभु के संत और वैसे ही प्रभु के भक्त, ऐसा मान कर काकाजी जिए और सभी को जिवाया।** इसलिए **स्वामिजी कहते हैं– 'ताड़देव को आत्मीयता की गंगोत्री कही जाए।'** जैसी भगवान के प्रति आत्मबुद्धि और प्रीति, वैसी भक्त के प्रति आत्मबुद्धि और प्रीति से काकाजी जिए और सभी को जिवाया– वह साक्षात्कार दिन ! जैसे प्रभु धाम में हैं और जैसे मुक्त हैं, वैसे यहां हैं ऐसा मान कर काकाजी जिए। भगवान के संबंध वाला कहां से ?

मुझे याद है हम साधु होने वाले थे, उन दिनों में ताड़देव गए थे। एक मुक्त भी साधु होने वाला था। लेकिन ताड़देव की बात लेकर वह बाहर खूब गंदा प्रचार करता था। फिर भी वो ताड़देव आए तो जैसे महंतस्वामी और हरिप्रसादस्वामिजी युवक के रूप में आते थे, वैसा ही सम्मान उस युवक का वहां करते। किसलिए करते ? कि– वह योगीजी महाराज का था–इसलिए ! यह साक्षात्कार दिन ! भगवान के संबंध वाले के पास हम कुछ नहीं। वह कहां से ? काकाजी के जीवन में यह था, योगीजी महाराज का संबंध वाला– बस ! हमारे यहां एक संत था, स्वामिजी को खूब परेशान करे। योगीजी महाराज ने उसे दीक्षा दी थी, निजी कुटुंब का लड़का था। उसके पिताजी ताड़देव जाते थे, काकाजी के साथ ओत-प्रोत हुए थे और 66 की साल में हमारा हरिधाम आने का हुआ, तो वह संत भी साथ में था। वह स्वामिजी को खूब परेशान करे। रात को सोने ना दे, स्वामिजी को तो दिन में जागना और वह सो जाए ! ऊपर छत पर गर्मी के दिनों में स्वामिजी के साथ घंटों तक गोष्टि करे और स्वामिजी को हम पूछें कि क्या गोष्टि करी ? तो कहते– आनंद ! दूसरे दिन बुलाए तो भी जाते। बाहर जाए तो भी वह स्वामिजी की मर्यादा नहीं रखे। सतुभाई सत्संग में नए-नए आए थे। सतुभाई ने आकर मुझे कहा कि इस संत को जोड़ में नहीं भेजना; हम जैसों को संत का अभाव आएगा कि स्वामिजी का संभालता नहीं है। लेकिन स्वामिजी उसे उतने ही प्रेम से रखते। फिर हमने काकाजी को बात करी और उसे सांकरदा-अक्षरविहारीस्वामिजी के पास भेज दिया। तब भी स्वामिजी बोले कि हमें उसे यहां बुलाना है।

हमने स्वामिजी को मना करी कि स्वामिजी ! वह आपको परेशान करता है। स्वामिजी ने एकदम कहा कि योगीजी महाराज हैं अभी पृथ्वी पर ? मैंने कहा– 'नहीं'। तो बोले कि अब हमें इनसे ली हुई दीक्षा वाला साधु मिलेगा क्या ? योगीजी महाराज से ली दीक्षा वाला तो है ना यह ? फिर काकाजी पधारे, तब काकाजी ने भी यही बात करी कि योगीजी महाराज से ली दीक्षा वाला साधु कहां से ? इसलिए उसे ले आओ, फिर हम उसे लेकर आए। देखो, यह महिमा है कि बापा का संबंध वाला कहां से ? उसे चद्दर (गातरिया) किसने ओढ़ाई ? योगीजी महाराज ने ! यह साक्षात्कार ! साक्षात्कार यह हुआ कि जैसे भगवान के संबंध वाले अक्षरधाम में दिव्य हैं, ऐसे के ऐसे यहां चलते-फिरते, दोषों वाले, प्रकृति वाले, स्वभाव वाले वे सभी दिव्य हैं। यह काकाजी मानते थे। **हमारे पास यह बात रख कर गए कि तुम भी मानो-'संबंध वाले खूब बड़े'।** पप्पाजी ने सूत्र दिया है कि तुम्हारे सामने आए मुक्त को ब्रह्म की मूर्ति मान कर उसकी सेवा कर लो। वैसा काकाजी जिए और हमें वह बात दे गए हैं कि भगवान का संबंध वाला कहां से ? **उसमें गुण वाला-अवगुण वाला कुछ नहीं, संबंध ही ! 'संबंध वही स्वीकार'–यह सूत्र दिया था** और काकाजी को ऐसा साक्षात्कार हुआ था, इसलिए बालक बन कर वे जिए। आज स्वामिजी के पास एक भाई आए और स्वामिजी को बोला कि स्वामिजी आपका एक शब्द है, उसको पेटन्ट कर लें– 'बालक'। लेकिन **वर्षों पहले काकाजी कहते-हमें कहते कि 'बालक' बन जाओ -'बालक' बन जाओ। यह शब्द काकाजी ने दिया था।** इसलिए दासस्वामी ने कीर्तन में लिखा है कि 'बालक' की भांति बन जाएं। हमें काकाजी का ऐसा 'बालक' बन कर जीना है...

काकाजी तो प्रभु की रसघन मूर्ति थे, भगवान की रसघन मूर्ति को धारे हुए पुरुष थे। वो जानते थे– क्या होने वाला है कल– उसका उन्हें ख्याल था; फिर भी एक भगवान के आधार से वे जीते-केवल भगवान के आधार से। जब हमारा चेप्टर हुआ और हम मंदिर से ताड़देव आ गए, काकाजी तो हाज़िर नहीं थे। 39 संत ताड़देव में आ गए थे और काकाजी डिलक्स से साढ़े-तीन बजे पधारे– तब पप्पाजी तो विद्यानगर जा चुके थे। सारा ताड़देव ख़ाली था, दो-तीन भाई ही थे। काकाजी सीढ़ियाँ चढ़ें और ऊपर आकर हम सब संतों को देख कर पूछा कि तुम सब आ गए ? बस इतना ही बोले, हमने कहा कि– 'आ गए।' फिर बोले कि चलो मैं स्नान कर लूं। स्नान करके पूछा नहीं कि तुम कैसे आए, क्या करा - कुछ नहीं। सिर्फ बोले कि चलो बैठ जाओ– धून करें। यह है प्रभु का आधार ! कैसा परिणाम आना है, वह उन्हें ख्याल था। 39 संत ! **इसे प्रभु के आधार से जीए कहा जाए।** हम 39 संत वहां रहे। संतों को संभालना बहुत मुश्किल है। बापा एक ओर थे; हरिधाम-सोखड़ा गाँव में हम कैसे रहे हैं, वह हमें ख्याल है, काकाजी साक्षी हैं। हमें मिठाई लानी हो, तो ताड़देव से काकाजी बलवंतभाई सोनी के साथ भेजते, ऐसी परिस्थिति थी। हम किसी से मांगते नहीं थे। **काकाजी और स्वामिजी ने हम बापा से दूर हैं ऐसा कभी भी मानने नहीं दिया। काकाजी और स्वामिजी की हमारे ऊपर बड़ी से बड़ी कृपा हो तो वह यह है। काकाजी ने किसी भी दिन बापा के प्रति मनुष्यभाव नहीं आने दिया।** कोई व्यवस्था नहीं थी, फिर भी हम सभी को आनंद में रखा।

वह काकाजी का साक्षात्कार है। वही स्वामिजी का साक्षात्कार दिन भगवान के साथ ! अपरंपार वे जीए और हम सभी को जिवाया। आज के मंगलकारी दिन काकाजी के चरणों में, पप्पाजी-स्वामिजी के चरणार्विंद में, दिनकरभाई पधारे हैं उनके चरणार्विंद में, गुरुजी के-निर्मलस्वामी के-भरतभाई के चरणार्विंद में प्रार्थना करें कि हम सभी के दिल में ऐसा महिमा का साक्षात्कार प्रगटे। काकाजी के जीवन में प्रथम की पहली बात साक्षात् थी। हम सभी के जीवन में भगवान के भक्त की ऐसी महिमा प्रगटे। **भगवान के भक्त के सामने** काकाजी यूं मानते थे कि **मैं कुछ नहीं हूँ, किसी को ख्याल नहीं दिया था... जो परिस्थिति सर्जित हो रही है, वो भगवान सर्जित कर रहे हैं, ऐसा अखंड मान कर काकाजी जिए।**

तो आज के मंगल दिन हम सब को बड़े पुरुष आशीर्वाद दें कि ऐसी महिमा से हम जीते हो जाएं। **एक-दूसरे के दास बन कर जिए, सभी का स्वीकार करके जीवन जिएं।** काकाजी ऐसे अखंड जिए। **उन्होंने कैसी भी प्लानिंग करी हो, कोई मुक्त बदल दे तो तुरंत काका हँसते मुँह से उसका स्वीकार कर लेते।** ऐसा हम सभी का तंत्र महाराज-स्वामी, गुरुहरि हमारा कर दें–गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई, निर्मलस्वामी हम सभी के लिए ऐसी प्रार्थना करें... ऐसी महिमा का साक्षात्कार और ऐसी निष्ठा खूब-खूब दृढ़ हो जाए, ऐसा जल्दी से जल्दी कर दें, इतनी ही प्रभु चरणों में-गुरु चरणों में प्रार्थना !

प.भ. वच्छराजजी

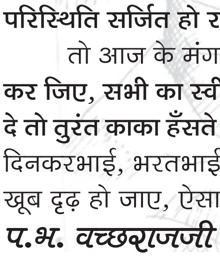

... कल 31 तारीख को हम लोग प.पू. गुरुजी का 65वां प्रागट्य दिन मनाएंगे। गुरुजी की महिमा के बारे बहुत कुछ कहने का मन होता है। लेकिन उनकी महिमा हम शब्दों में बयान नहीं कर पाएंगे। **गुरुजी** के साथ रहते-करते मुझे आज करीब 24-25 साल हो गए। **उनका जीवन ही एक महिमा का है।** मैं इसलिए बात कर रहा हूँ कि कल हम उनका प्रागट्य दिन मना रहे हैं... सो, मेरे मन में जो बातें हैं वो प्रार्थना के रूप में प.पू. स्वामिजी के चरणों में, दिनकरभाई के चरणों में रखना चाहूँगा। ज्यादा ज्ञान की चर्चा तो मैं नहीं जानता। लेकिन जो मैंने सुना, जो मैंने थोड़ा बहुत समझा है और घर की सभा है इसलिए

कहने का आज दिल हो रहा है।

जूनागढ़ का इतिहास हम सब जानते हैं। जूनागढ़ के नवाब ने महाराज से प्रार्थना करी थी कि महाराज ! जूनागढ़ में आप जैसा कोई फकीर यहां छोड़ कर जाना। महाराज ने वो प्रार्थना सुनी और मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को जूनागढ़ मंदिर के महंत बना कर महाराज ने अद्‌भुत करूणा करी। वह इतिहास मानो आज दोहरा रहा है। **काकाजी के संबंध में कई संत थे। उसमें से काकाजी ने गुरुजी को देकर हमारी अद्‌भुत लॉटरी लगाई।** काकाजी ने गुरुजी को पसंद किया, हमारे लिए यहां रखा। काकाजी की दृष्टि कैसी होगी ?

फरवरी आखिर 1986 में काकाजी की एक इच्छा थी कि माथेरान में योगीजी महाराज से दीक्षित संतों की एक शिविर रखें। काकाजी ने रट लगा ली थी कि इन सब संतों को इकट्ठा करना है। काकाजी ने हरिधाम, सांकरदा, समढियाला–हर जगह चिट्ठियां लिखीं कि चाहे तुम्हें कितना ही काम हो, इस शिविर के लिए सब को यहां आना है। ये बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि हम सब इस बात को समझेंगे, कुछ रेफरेन्स अपने माईन्ड में रखने की कोशिश करेंगे, तो समझ पाएंगे कि महाराज ने जैसी कृपा जूनागढ़ के मंदिर पर करी, ऐसी कृपा काकाजी ने हमारे पर करी है।

वहां रमेशभाई सोनी विराजमान थे, उन्होंने काकाजी से एक-दो बार प्रार्थना करी कि काकाजी हम गुरुजी को भी इस शिविर का मेसेज़ दे दें । लेकिन काकाजी ने कुछ टाल-मटोल करी। फिर दूसरी-तीसरी बार रमेशभाई ने प्रार्थना करी कि काकाजी हम गुरुजी को बुला लें। तो काकाजी ने कहा कि मुकुंद को तो मैं फोन कर दूँगा, वो आ जाएगा। लेकिन काकाजी ने मानो अपनी कोई योजना पहले से ही तय करके रखी थी। हम सब जानते हैं कि उसके बाद काकाजी ने बीमारी ग्रहण करी और बाद में भी काकाजी ने कहा कि वैसे तो मैं 16 मार्च को दिल्ली जा ही रहा हूँ, वहां मुकुंद को मिल लूंगा। फरवरी आखिर में काकाजी ये बात कर रहे हैं कि योगीजी महाराज के दीक्षित सब संतों को बुलाना है। उसमें गुरुजी भी एक संत हैं। फिर भी काकाजी ने यही कहा कि– मैं जाऊंगा-फोन करूंगा और सोलह मार्च को तो मैं दिल्ली जा ही रहा हूँ, तो वहां सारी बात उससे कर लूंगा। उसके बाद हम सब जानते हैं कि सात मार्च को तो काकाजी ने शरीर छोड़ दिया !

जब शास्त्रीजी महाराज अंतर्धान हुए, तो योगीजी महाराज फिज़िकल रूप में हाज़िर नहीं थे। योगीजी महाराज ने शरीर छोड़ा, तो काकाजी स्थूल रूप से उनके पास हाज़िर नहीं थे। काकाजी महाराज ने शरीर छोड़ा, तो स्थूल रूप से गुरुजी वहां हाज़िर नहीं थे। ये सारा इतिहास है। और... सोलह मार्च को तो हम यहां काकाजी की श्रद्धांजली की सभा कर रहे हैं। यूं काकाजी का वो कोई मार्मिक संकेत था। वो पूरे के पूरे गुरुजी में समा गए। पंजाब के कई मुक्त यहां बैठे हुए हैं। **1985 में काकाजी** वहां पधारे थे। स. गुरुबख़्शसिंहजी के यहां उन्हों**ने कहा था** कि – **'अब मुझे अगर मिलना है, तो आप दिल्ली में मिलना।'** ऊपर प्रर्दशनी में आर.के. पटेल और मंजूलाबेन की एक फोटो लगी हुई है। उस परिवार को भी काकाजी ने कहा था कि– 'पटलाणी ! **मैं अंतर्धान होऊँगा, लेकिन दिल्ली में आप सभी के बीच रहूँगा।**' काकाजी के वो मार्मिक शब्द हम कभी भी समझ नहीं सकते थे कि काकाजी का कहना था कि काकाजी दिल्ली में आज भी गुरुजी के रूप में वैसे के वैसे हाज़िर हैं।

ब्रह्मज्योति में जब काकाजी का अंतिम संस्कारविधि हम लोग कर रहे थे, तब 8 मार्च को **पप्पाजी** के मुखारविंद से हमने सुना हैं कि – **'गुरुजी ने जोर से चीख मारी और काकाजी पूरे के पूरे गुरुजी में समा गए।'** ज्योत से 1991 में एक पत्रिका निकली थी, उसमें भी **पप्पाजी ने बताया** है कि काकाजी को साक्षात्कार हुआ था, उसके बाद में शास्त्रीजी महाराज काकाजी को वश हो गए थे-हाज़राहजुर थे। इसी प्रकार **गुरुजी में काका बैठ गए।**

तो, कल हम गुरुजी का प्रागट्य दिन मना रहे हैं। सब गुणातीत स्वरूपों के चरणों में दिल्ली की तरफ से– सब भक्त समाज की तरफ से प्रार्थना हम करते हैं कि स्वामिजी-काकाजी जो मिशन लेकर के चले हैं, इसमें गुरुजी एक-एक कदम काकाजी को याद करके जीते हैं, वो हर क्रिया काकाजी की भक्ति मान कर करते हैं– और बात मुझे कुछ करनी नहीं है– लेकिन काकाजी की उस अद्‌भुत योजना में हम सब जुड़ जाएं और गुरुजी की योजना में भी हम कभी उन्हें मोहताज़ ना करें– ऐसे आशीर्वाद देकर जाना, ऐसी आपके चरणों में प्रार्थना है !

प.पू. स्वामिजी

... मैं एक बात करता हूँ। हम काकाजी का साक्षात्कार दिन मना रहे हैं। काकाजी को शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की ओर अद्‌भुत निष्ठा थी। अच्छी तरह बात सुनना। वो बम्बई में जब उनकी ऑफिस में बैठते थे-काम करते थे, उसी वक्त वो निमित्त बन कर भुलका बन कर मध्य इक्तालिस के मुताबिक सेवा करते थे। शुरु से सब हरिभक्तों में केवल योगीजी महाराज के दर्शन वो करते ही रहे-करते ही रहे। इसलिए उनकी मस्ती कभी गई नहीं है। गुरुजी ने बहुत अच्छी बात बतलाई है आपको, बहुत गुणगान गाते ही रहते हैं। काकाजी से गुरुजी ने बहुत अद्‌भुत-बहुत अद्‌भुत प्रीति करी है, वो आपको मालूम ही है।

जब काकाजी को बापा ने आज्ञा करी, आपको साबरकांठा की धरती पर इलेक्शन के लिए जाना है, काकाजी को उनके पार्टनर्स ने मना कर दी कि दादुभाई आप जाओगे तो बिजनेस का क्या होगा ? छगनभाई ने कहा कि आप जाओगे तो होगा क्या ? पर, **काकाजी के हृदय में— रोए-रोए में एक ही बात थी, एक ही व्यक्ति का स्थान था—योगीजी महाराज ! प्रथम योगीजी महाराज—फिर सब कुछ।** सब को बोल कर दो-तीन गाड़ियां लेकर वो चले गए। दो-सवा दो महिने साबरकांठा की धरती पर रहे। वहां उसी समय रास्ता भी नहीं था— सारी डिस्ट्रीक्ट में वो जब इलेक्शन में गए, खूब तकलीफें सहन करीं। फिर भी, नो वाईब्रेशन्स एट ऑल वीधीन- हृदय में कोई आन्दोलन नहीं। मन-बुद्धि का किंचित आन्दोलन नहीं। दोपहर को भोजन मिले या नहीं मिले— तीन बजे-चार बजे मिले तो भी आंदोलन नहीं। रात को जहां सोते थे, वहां बराबर में लेट्रीन-बाथरूम, यूरीनल था। यूं उस समय रहने की जगह भी अच्छी नहीं थी। रास्ता ही अच्छा नहीं था, तो मकान कहां से अच्छा होगा ? केवल गंदगी-केवल दुर्गन्ध। मगर मस्ती से वे सो जाते थे। जितना आनंद सानुकूलता में है, इससे ज्यादा आनंद काकाजी को प्रतिकूलता में आता था। इन विपरीत परिस्थिति में ऊपर से राजा का इतना विरोध ! काकाजी को खत्म करने के लिए धमकी भी वो दे चुका था— दादुभाई चले जाओ, आप साबरकांठा छोड़ दो। फिर भी मस्ती में ! वहां अपना कोई व्यक्ति नहीं था, अपना कोई समाज नहीं था, कोई पहचान नहीं थी... दो महिने में पंद्रह दिन तो रात को उन्हें खाना नहीं मिला था। तीन-चार बजे तक वे काम करते ही रहे-करते ही रहे-करते ही रहे। किंचित् आनंद नहीं गया। उनको एक निष्ठा थी। **हर एक व्यक्ति की निष्ठा देह में है।** हर एक व्यक्ति की निष्ठा इन्द्रियों में है। अपनी आँख कहां चली जाती है, हमें मालूम नहीं होता है। कान क्या सुनता है, जीभ क्या बोलती है हमें मालूम नहीं है। हर एक व्यक्ति को मन-बुद्धि के प्रभाव में आनंद करना बहुत अच्छा लगता है। **हम लोग देह के गुलाम हैं, इन्द्रियों के गुलाम हैं, मन-बुद्धि के, सात्त्विकता के, अपनी समझदारी के गुलाम हैं।** तब काकाजी को साक्षात्कार नहीं हुआ था। साक्षात्कार से पहले की बात मैं करता हूँ... वो अपनी अद्भुत-अच्छी ऑफिस में सब के साथ जितना आनंद करते थे, उससे ज्यादा आनंद योगीजी महाराज को राजी करने के लिए साबरकांठा की धरती पर विपरीत परिस्थिति में उन्होंने माना। नंदाजी तो अमदावाद वापिस चले गए ! दादुभाई आप ठहरो-सब लोगों का विरोध बहुत है। यहां डिफीट होने वाली ही है। क्या प्रयत्न करें ? नंदाजी उस समय यही बात करते थे। 'बापा अपने साथ हैं—कर्ता-हर्ता एक बापा हैं। ये ब्रह्मांड में कोई व्यक्ति ही नहीं है, योगीजी महाराज ही एक जीवंत व्यक्ति हैं, वो ही एक सर्वज्ञ व्यक्ति हैं, वही एक दिव्य व्यक्ति हैं, एक ही सुखकारी व्यक्ति हैं, एक ही आनंदघन मूर्ति है'— ऐसी निष्ठा से काकाजी दो महिने साबरकांठा की धरती पर रहे। मगर किंचित् आनंद नहीं गया। वो बात तो ठीक है, दुश्मनों में भी प्रभु का दर्शन करके काकाजी आनंद में रहे। अपमानों की वर्षा बरसी, मगर निष्ठा के प्रभाव से वे शीतलता का अमृत हृदय में मानने लगे।

मेरी एक बात सुनना— गुजरात की धरती पर करूण हालत थी, अभी नहीं है। जब गोधरा की घटना घटी तब भगवान ने बहुत रक्षा करी है। यहां से स्टार्ट हुई गाड़ी—'साबरमती', वो पाँच घंटे लेट हो गई। वो बहुत अच्छा हुआ। पाँच हज़ार लोग दो बजे से आकर बैठे थे, गाड़ी सुबह साढ़े सात बजे पहुँची ! एक डिब्बा जला दिया, रात्रि को तीन बजे पहुँची होती तो 'जय स्वामिनारायण'-सब खतम होने वाला था। फिर तीन-चार दिनों तक गुजरात में भय का भयंकर वातावरण खड़ा हो गया। हम तो सोखड़ा में रहते हैं। सोखड़ा गाँव में दोपहर को दो बजे अफवाह आई कि नज़दीक के गाँव से पाँच हज़ार जने सोखड़ा गाँव को लूटने के लिए दो ट्रक से आ रहे हैं। सोखड़ा गाँव के छोटे बच्चे, आबाल-वृद्ध सबकी स्थिति देखने जैसी थी। सब रोते थे— क्या होगा ? जबकि साबरकांठा की वो धरती पर काकाजी को ज़हर पिलाने के लिए प्रयत्न किया गया, उनको खत्म करने के लिए प्रयत्न किया गया, पर मर्दानगी से-मस्ती से—कुछ नहीं हो रहा है, एक ही व्यक्ति है धरती पर— एक ही आनंददायक मंगलकारी मूर्ति है-धरती पर एक ही आकार है, ऐसी निष्ठा से-निर्दोषबुद्धि से थोड़ा-सा एक सैकण्ड के लिए भी उनको संकल्प नहीं उठा था कि क्या होगा ? राजा की 104 गाड़ी घूमती थी, काकाजी और नंदाजी की सिर्फ चार गाड़ी घूमती थी— इसमें तीन काकाजी की !

मैं आपको ये बात इसलिए करता हूँ कि सामाजिक जीवन में हमें **थोड़ा किंचित कोई प्रसंग हो जाता है, तो हम हिल जाते हैं।** गुरुजी ने बोला कि — 'रक्षा होगी या नहीं होगी ?' ऐसे में हम हिल जाते हैं। गुरुजी ने आपके सम्मुख नहीं देखा और थोड़े आक्रोश से देखा, हिल जाते हैं। ऐसी परिस्थिति परिवार में भी हो जाती है। आपस-आपस में लड़के-लड़कियाँ, हस्बन्ड-वाईफ के बीच में जब ऐसा प्रसंग पैदा हो जाता है, जब आत्मीयता नहीं रहती है—हिल जाते हैं कि क्या होगा ? बहुत भजन किया, बहुत सत्संग किया, भजन करते हैं लेकिन आनंद तो चला गया ! परंतु, **जिसकी निष्ठा संपूर्ण है उसका बेलन्स ऑफ माईन्ड बहुत अच्छी तरह स्थिर रहता है,** वो आनंद में रहता है। हम यह उत्सव मना रहे हैं, क्यों ? गुरुजी ने अद्भुत परिश्रम करके ये एग्ज़ीबीशन आयोजित करा, क्यों ? आप सब को बुलाया, क्यों ? हर एक उत्सव, हर एक फेस्टीवल, हर एव प्रसंग— धुलेन्डी हो, रामनौमी हो, जन्माष्टमी हो, दीपावली हो, प्रागट्य दिन हो हम सब मनाते हैं उसके पीछे **एक ही भावना है— प्रभु और संत की एक ही भावना है कि आप हमारी ओर चलो...।** काकाजी भजनिक थे। गुरुजी काकाजी की बहुत बात करते हैं। तो हम लोग जो उत्सव मनाते हैं, उसके पीछे भावना एक ही है— गुरुजी के साथ हमारा संबंध बढ़ता रहे— बस ! **'मैत्री'— मन-बुद्धि से पार** ! सामान्य प्रसंग पर ही तो उद्दे

आ जाता है, मान मिल जाता है तो आनंद आ जाता है। अपनी मनमानी ना हो तो दुःखी हो जाते हैं। कोई व्यक्ति अपनी आँख के इशारे पर, अपने कहे मुताबिक बर्ताव नहीं करती है, तो हमारा मन हिलता जाता है-अभाव ले लेता है। तो ये जो उत्सव, फेस्टीवल मना रहे हैं उसके पीछे एक ही कारण है कि हमारा संबंध उत्तरोत्तर गुरुजी के साथ बढ़ता जाए– बस ! **समाधि का दूसरा अर्थ है निर्दोषबुद्धि** ! कल मैं समझाने के लिए थोड़ा प्रयत्न करूंगा। **काकाजी को योगीजी महाराज साबरकांठा से गोंडल क्यों ले आए ?**

जितनी निर्दोषबुद्धि, उतना सुख-शांति और आनंद। जितना सुहृद्‌भाव, उतना ही दासत्व ! 'मेरा मुझ में कुछ नहीं, मेरे लिए आप ही सर्वस्व'– ऐसी एक भावना से संसार में जीने के लिए आपको एक मौका मिला है, तक आपको मिली है। तो मंगलकारी शुभ दिन आपके लिए भगवान स्वामिनारायण, गुणातीत पुरूषों काकाजी, पप्पाजी, गुरुजी, दिनकरभाई सबके चरणार्विंद में एक ही प्रार्थना है– आपका वो संबंध बढ़ता जाए, बस ! निर्दोषबुद्धि मीन्स निर्विकल्प समाधि, निर्दोषबुद्धि मीन्स गुरुजी का हर एक सैकण्ड का वर्तन, हर एक क्रिया और गुरुजी के संबंध वाले सभी भक्त छोटा या बड़ा प्यारा लगे। काकाजी ने निर्दोषबुद्धि सब में रखी, दुश्मनों में भी रखी, परोक्ष वालों में भी रखी। प्यार करते थे उसमें भी रखी, अपमान करते थे उनमें भी रखी। उनका माईन्ड हिलने नहीं दिया, वे पास हो गए। योगीजी महाराज राजी हो गए, योगीजी महाराज में सम्यक् निष्ठा थी। सुख, शांति, आनंद का स्त्रोत्र गुरुजी एक ही हैं-योगीजी महाराज हैं और ये योगीजी महाराज ने गोंडल के घनश्याम महाराज के सामने उनको प्रार्थना करी कि दादुभाई ईडरिया गढ़ जीत कर आए हैं, तो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, अहं– वो आठ गढ़ का - प्रकृति-पुरुष का जो प्रभाव है, उससे पार लेकर उन्हें अक्षरधाम की निर्दोष-दिव्य समाधि में हे घनश्याम महाराज ! आप ले जाओ। तो वो समाधि काकाजी को घनश्याम महाराज के सामने हुई– योगीजी महाराज ने प्रार्थना करी और समाधि हुई और साक्षात्कार हुआ।

आपकी यदि निर्दोषबुद्धि नहीं होगी, आपका स्वाध्याय-भजन निर्दोषबुद्धि के लिए नहीं होगा, कभी भी संबंध नहीं होगा। 'मैं आँख से नापास हो गया– करो भजन-स्वाध्याय। 'मैं जीभ से नापास हो गया'– करो स्वाध्याय-भजन। 'मैं मन से चिंता में डूब गया'– करो स्वाध्याय-भजन। 'मैंने मन से, बुद्धि से अभाव लिया'– करो स्वाध्याय-भजन। गुरु की स्मृति करके काकाजी ने अपनी यात्रा को इस संसार में अद्‌भुत चलाया, भगतजी महाराज ने चलाया। आज गुरुजी भी चलाते हैं, दिनकरभाई भी चलाते हैं, भरतभाई भी चलाते हैं। आज एक अद्‌भुत समाज है। **निर्दोषबुद्धि– वही निर्विकल्प समाधि है।** कल समझाने के लिए मैं थोड़ा प्रयत्न करूंगा... **काकाजी को गोंडल के घनश्याम महाराज के सामने समाधि का दर्शन का जो प्रसंग स्वामिजी ने खड़ा किया, उसके पीछे स्वामिजी की एक भावना थी। काकाजी ने जिस प्रकार से समर्पण– देह से, धन से, मन से किया, इसका फल– एक निर्विकल्प समाधि का सुख, शांति और आनंद, प्रभु का अद्‌भुत दर्शन, प्रभु का प्रागट्‌य है– वह सराऊडिंग समाज को ख्याल आ जाए और काकाजी एक ऐसी व्यक्ति हैं, जिसको प्रभु ने अपने आप में डुबोया है।** फिर काकाजी ने अद्‌भुत महिमा गाई।

योगीजी महाराज का सम्यक् दर्शन काकाजी ने करवाया। 1954 में जब मैंने योगीजी महाराज के पहली बार दर्शन आणंद के मंदिर में किए, उसी वक्त एक सामान्य-तकिया भी पीछे नहीं था। एक सामान्य रजाई पर वे बैठे हुए थे। बोचासण गया, तकिया नहीं था। दो रजाई पर सब सद्‌गुरु बैठे हुए थे। योगीजी महाराज की कोई कीमत नहीं थी– 'वो भोला-भला साधु है'– सिर्फ इतना सब समझते थे। किसी को मालूम नहीं था, मगर सब में काकाजी के लिए एक सम्मान प्रगट हो गया और काकाजी ने खूब अद्‌भुत महिमा गायी– खूब अद्‌भुत महिमा गायी। योगीजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज के बहुत हरिभक्त थे। पर, काकाजी ने सच्चे संत की पहचान कराने के लिए-योगीजी महाराज का सम्यक् दर्शन कराने के लिए सारे समाज में महिमा गाया कि ये साधु ऐसा है, संबंध करो। कैसे करो ? निर्दोषबुद्धि और सुहृद्‌भाव से। यूं इन्होंने अद्‌भुत सेवा करी। **तब समाज को ख्याल आ गया कि योगी सिर्फ भला-भोला साधु नहीं है, वो दिव्य पुरुष हैं। अक्षरधाम के सिंहासन पर बैठे हुए महाराज-योगीजी महाराज में अखंडित ही हैं।** तब तो लोग थोड़ा सुनने लगे और सेवा में ओतप्रोत होने लगे। बाकी स्वामिजी की कोई कीमत नहीं थी। गोंडल में योगीजी महाराज बैठे थे, आसन नहीं था, ऐसा-नीचे बैठे थे। मैं पहली बार जब 1955 में गोंडल गया, नीचे बैठे थे–एक भगवी रजाई थी। एक साधु ने आकर स्वामिजी को कहा– स्वामिजी, आप यहां क्यों बैठे हुए हो ? वहां बहुत काम है, आप चलो ना– वर्ना काम नहीं होगा। स्वामिजी भी चले गए और रसोई में सब के साथ काम करने लगे। मगर **काकाजी ने अद्‌भुत दर्शन करा कर एक ऐसा अद्‌भुत संबंध कैसे किया जाए, 'भुलकु' कैसे बनें– ऐसा एक मंगलकारी संबंध कराने की अद्‌भुत सेवा करी है।** आपका कोई बलिष्ठ सस्कार होगा जिसके फलस्वरू काकाजी ने दिल्ली वालों पर कृपा करके गुरुजी को यहां रखा है। गुरुजी के साथ आपका संबंध बढ़ता जा रहा है। आज के शुभ मंगलकारी दिन काकाजी, पप्पाजी, दिनकरभाई, गुरुजी के चरणों में एक ही प्रार्थना है– आप सबका संबंध गुणातीत पुरूषों के साथ बढ़ता रहे, बढ़ता रहे और आपका देह मंदिर बने, घर मंदिर बने ऐसी भावना से मैं प्रार्थना करता हूँ...

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीवर्चन एवं प्रवचन– क्रमशः)

ताड़देव की गतिविधियाँ

✷ दिल्ली के भक्तों को दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देने **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी दीवाली के मंगलकारी दिनों में दिल्ली पधारे।** प.पू. स्वामिजी की तबियत नादुरूस्त होने के कारण प.भ. मल्कानी अंकल के फार्म हाऊस पर ही आराम करने रुके। 31 अक्टूबर की शाम को दिल्ली मंदिर पधारे।प.भ. मल्कानी अंकल, प.भ. राकेशभाई, प.भ. पुरी साहेब, प.भ. वच्छराजभाई ने अपने हृदय के भाव के शब्दों से प.पू. स्वामिजी का स्वागत किया व उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से प्रार्थना करी। सभी के प्रवचन में जब यह बात आई कि हमारे लिए तो आज ही दीवाली है ! तो, **प.पू. गुरुजी** ने बताया कि– 'झूठ बनावट में नहीं कहना है। **अगर हम सच में मानते हैं कि प.पू. स्वामिजी के आने से आज हमारी दीवाली है, तो दीवाली की तरह प. पू. काकाजी के समाधि स्थान पर दीये जलाओ।**' प.पू. गुरुजी की आशिष याचना के बाद प.पू. स्वामिजी ने आशिष प्रदान किए। उस दिन सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्मदिन होने के कारण **प.पू. स्वामिजी** ने उनके जीवन के बारे बातें करते हुए बताया कि **राजनीति में व गृहमंत्री के रूप में भी इतना सक्रिय होते हुए भी 'सरदार' सुबह 6:00 से 6:45– पैंतालिस मिनिट जरूर अपनी आत्मा के लिए निकालते थे।** दूसरी बात– प.पू. स्वामिजी द्वारा दी गई आशीर्वाद रूप वाणी का निचोड़ यह था कि –'प.पू. गुरुजी के साथ सरलता, अखंड दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि का संबंध बढ़ाते जाना'– वही जीवन की परम धन्यता है।दीवाली के मंगल दिनों में यूं प.पू. स्वामिजी व प.पू. गुरुजी के आशिष पाकर-प्रसाद लेकर सभी ने विदाई ली।

✷ हर साल की तरह अबकी बार भी '**अन्नकूट**' पर श्रीजी महाराज अपने भक्तों को दर्शन देने लुभावना-निराला रूप लेकर तैयार खड़े थे। अबकी बार ठाकुरजी व सर्व गुणातीत स्वरूपों पर 'छत्र' का डेकोरेशन अत्यधिक आकर्षक रूप लिए हुए तो था ही व साथ ही इस बात का प्रतीक था कि गुणातीत स्वरूपों की सेरेछाया रूपी छत्र हम पर होने से ही हम सभी खूब सुरक्षित हैं और अपने जीवन में सुख, शांति व आनंद भी उन्हीं की कृपा से है। पूरे साल दौरान खाए जाने वाले भांति-भांति के व्यंजन, सूखे मेवे, मिष्टान्न, फल आदि का भोग 'ठाकुरजी' के सम्मुख सुंदर रूप से सजा कर अर्पित किया था। दूसरी ओर पीछे पार्क में सभामंडप में जगरांव के आर्टीस्ट प.भ. सोमनाथजी कतियाल द्वारा पर्दे पर ब्रह्मांड का दृश्य चित्रित किया था, जिसमें सूर्य के स्थान पर श्रीजी महाराज और पृथ्वी पर मानव रूप में श्रीजी को अखंड धार कर आई विभूति प.पू. काकाजी मानो नए वर्ष के आशीर्वाद देने विराजमान थे। दस बजे सभी भक्त प.पू. गुरुजी की परावाणी का लाभ लेने पीछे के पार्क में इकट्ठे हुए। इस मंगल अवसर पर मुंबई, अमदावाद, पंजाब, यू.पी., राजस्थान आदि से भी काफी मुक्त 'अन्नकूट' का दर्शन करने दिल्ली पधारे थे।प.पू. गुरुजी की परावाणी का लाभ लेकर सभी 'ठाकुरजी' की आरती करने ऊपर हॉल में गए। जगह कम होने के बावजूद सभी इस क्षण के ठाकुरजी का दर्शन करने खूब लालायित थे।अत्यधिक भावपूर्ण वातावरण में ठाकुरजी का थाल आदि गाकर आरती संपन्न हुई। फिर सभी ने पीछे के प्रांगण में आज के लिए बनाया गया कढ़ी-चावल व मिक्स सब्जी का विशिष्ट प्रसाद लिया। **प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सभी समय का भान भूल कर मग्न हो जाते हैं।** साढ़े तीन बजे के करीब ठाकुरजी के पास से महाभोग उठाना शुरू किया। भक्तों ने महाप्रसाद लिया, हर वर्ष की भांति बर्तन आदि धोने की सेवा शुरू हुई और उसके बाद उल्लास-उमंग से रास वगैरह का प्रोग्राम शुरू हुआ। युवा लड़कों ने '**मूर्ति का आनंद अंतर में समाए ना...**' प.पू. गुरुजी की अद्भुत स्मृतियों पर आधारित भजन पर बहुत ही भावपूर्ण गरबा प्रस्तुत किया। आश्चर्य की बात यह थी कि दो - दो रात से सेवा में जगे होने के बावजूद किसी के मुख पर थकान का नाम नहीं था। प.पू. गुरुजी जैसे संत की प्राप्ति की मस्ती से सभी झूम रहे थे। आख़िर 'अन्नकूट महोत्सव' की पूर्णाहुति हुई और पूरे दिन की अद्भुत स्मृतियां लेकर 'ताड़देव' के प्रांगण से सभी विदा हुए।

✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद

... दीवाली कार्ड तो आपके हर एक के पास पहुँच गया होगा , लेकिन बहुत कम लोग ऐसे होंगे- जिन्होंने कार्ड भी ठीक से पढ़ा होगा। ये में इसलिए कहता हूँ कि कई इतने फोन आए थे कि गुरुजी अन्नकूट 4 को है या 5 को है ? मैंने पूछा कि आपको कार्ड मिल गया ? कहते हैं कि कार्ड तो हमको मिल गया -बहुत बढ़िया कार्ड है। मैंने कहा कार्ड में ही तो लिखा है– 5 तारीख को। तो कहते हैं अच्छा-अच्छा ! ये है आप लोगों का पढ़ना ! इसलिए मैं कहता हूँ कि नए साल का नया दिन– खुलता दिन है, तो हम कार्ड ही ज़रा एकचित्त से पढ़ें। लेकिन जैसे कि मार्च की शिविर में **पू. दिनकरभाई** ने कहा था कि **हम श्रद्धालु नास्तिक हैं।** श्रद्धा है तभी तो यहां आए हैं । आज मुझे एक जने ने बहुत अच्छी बात कही। मैं कुछ कच्चे-पक्के की बात कर रहा था कि यह कच्चा है-यह पक्का है। तो वह कहने लगा– गुरुजी आप क्यों गफलत में रहते हो ? **कच्चा तो कोई यहां आ ही नहीं सकता। जो आए हैं - वो सभी पक्के हैं।** मुझे हुआ कि यह भी अपने आप में एक समझदारी है। बहुत बड़ी समझदारी मानी जाए। पर, **ये समझदारी सच्चाई से दिल में रखनी है। दूसरों को समझाने के लिए नहीं, खुद को समझने के लिए।**

श्रद्धालु नास्तिक कैसा ? कि भगवान स्वामिनारायण के कई आशीर्वाद - कई वरदान इस धरती पर नए हैं अपने दिमाग में वो नहीं बैठेंगे। अभी प्रभाकर ने एक बात करी। मैं पूछता हूँ प्रभाकर क्यों भूल जाता है ? राईट ऑफ करने की, वेव ऑफ करने की, एकाऊंट क्लीयर करने की प्रभाकर और वच्छराज ने जो बातें करी। अरे ! हमारे बिना कहे वो वेव ऑफ करते ही रहते हैं, सिर्फ हमारे मानने की देरी है। देखो, गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा हैं कि डोढ़ पोर सुधी भगवान तो राह जोईने बैठा होय छे के दो हाथ जोड़कर कोई प्रार्थना करें कि मैं गुनाहगार हूँ- उसका गुनाह मैं माफ करता हूँ। क्या हम यह मानते हैं ? कि हमने प्रार्थना करी थी– 'माफ करो, म

करो'– और हो गया राईट ऑफ ! हम बोलते हैं वो, लेकिन इनकमटैक्स कलेक्टर जितना भी भगवान को नहीं मानते हैं । अगर इनकमटैक्स कलेक्टर ऐसेसमेन्ट करके कहेगा कि राईट ऑफ कर दिया और साईन कर देगा- तो हम कैसे मान लेते हैं ? क्या फिर भी कहेंगे कि नहीं - नहीं हमारा जो बकाया है उसका क्या ? देखो हमें विश्वास नहीं... **हम लोगों को काकाजी ने-पप्पाजी ने-स्वामिजी ने-साहेब ने कई ऐसे आशीर्वाद-वरदान दिए होंगे, पर हम मानते नहीं हैं। मानें तो सुखी !**

इसलिए दीवाली का जो कार्ड है, आशीर्वाद-वो ऐसे आस्तिकभाव से पढ़ें और समझें। आज हम दो मिनिट धून करेंगे। अंतर की सच्चाई से-दिल की सच्चाई से कि आज तक नहीं, अब तक का– धून करने वक्त तक का हमने जो कुछ करा है, प्रभु माफ करो। लेकिन हमारा मन बोलेगा– 'ऐसे थोड़े होता है' ? ये हमारा नास्तिकभाव है। जैसे गंगा में स्नान करके आते हैं, लेकिन वो सिर्फ कहने के लिए। कोई नहीं मानता कि मैं पवित्र हुआ। शिवजी और पार्वती वाली बात मैंने कई बार करी है। एक वेश्या थी, वो मानती थी। बाकी तो ठीक, भेड़चाल चलते हैं। **'अंधविश्वास'**– जिसको कहें, **वो काम नहीं करता...**

ये सारी जो बातें करते रहते हैं– मैं इसको ये समझता हूँ कि **हमारे प्रभु प्रगट हैं, सो यह चीज़ें बनती हैं। वर्ना यह संभव नहीं है। ऑवर फिलोसोफी इज़ लिविंग। जो मंत्र का हम जाप करते हैं-वो मंत्र को सिद्ध करी विभूति मानवस्वरूप में हमारे साथ हैं।** अर्जुन के सारथी कृष्ण जीवंत था, तो अर्जुन के कुरुक्षेत्र का अंत आया। वर्ना यह हो नहीं सकता था। **परोक्ष की भक्ति से संस्कार पड़ते रहेंगे, हम उस स्ट्रीम के अंदर बने रहेंगे, लेकिन प्रकृति का–प्रारब्ध का बदलना, उसके लिए तो लिविंग मास्टर ही चाहिए। स्वामिनारायण** की मानवजाति को सबसे बड़ी देन कहो-ब्लेसींग्स कहो-करुणा कहो, वो यह कि इन**की हाईरारकी कॉन्सटन्ट एण्ड कॉन्टिन्यूअस है** और **हम सब का परम सौभाग्य कहो कि इनके संपर्क में हम आ गए।** संबंध नहीं बोला जाएगा, **संबंध तो हमें करना पड़ता है।** जैसे राधा का था, मीरां का था, हनुमान का था, शिवाजी का था; वैसा अनन्यभाव से। चाहे कोई भी रिलेशन से संबंध हो, वो संबंध करना पड़ता है। लेकिन ऐसे सम्पर्क में आ गए वो हमारी सबसे बड़ी खुशकिस्मती है...

...**ये** जो मैंने बात करी वो **स्वामिनारायण की सबसे बड़ी बेमिसाल देन** है व **और कोई जगह पर वह नहीं मिलेगी।** उनकी पहचान होनी चाहिए-जानकारी नहीं। जैसे काकाजी कई बार बोलते थे-अटलबिहारी बाजपेयी प्राईममिनिस्टर है– वह जानकारी हम सब को है। लेकिन उसके साथ जिसकी पहचान होगी-वो ? फर्क पड़ गया ना ! ...यहां भगवान के भक्त की डेफिनेशन भी बताई है। सामान्यतः भक्त की व्याख्या क्या ? **माला फिराए - मंत्र रटता रहे - दूध की टोयली लेकर घूमे - बड़ को चढ़ाए - अगरबत्ती लगाए - गंगा में डुबकी लगाए- बगल में थैला हो - दर-दर भटकता हो– वो भगत !** काकाजी में तो ऐसी कोई चीज़ दिखाई नहीं पड़ेगी। आख़िर तक डबल घोड़ा बोस्की का सिल्क का कुर्ता पहनते थे... कई कितने प्रकार के ड्रेसिस पहने होंगे उन्होंने। अरे ! यहाँ आते थे, तो ये कोलोनी वाले बोलते थे– ये संतों के पास जो आता है, वो बड़ा स्मगलर लगता है। **काकाजी भी कहते– मैं तो हूँ ही स्मगलर ! अक्षरधाम का माल यहां देता हूँ...**

ये एक चीज़ कोई जगह पर नहीं है - प्रभु का अखंड प्रगटीकरण– मानवस्वरूप में ! ये आर्शीवाद देकर भगवान स्वामिनारायण ने मानवजाति को सौभाग्यवंता करा। **मानवस्वरूप में पारमेश्वरी चेतना जो विचरण करती हो, उसकी जिसको पहचान हो जाए वो भक्त !** हम सब भक्त ठहरे ना ? काकाजी के साथ, पप्पाजी के साथ, स्वामिजी के साथ, साहेब के साथ, महंतस्वामी के साथ, प्रमुखस्वामी के साथ हमारा एक संबंध हो गया है.....

कई योगीजी महाराज को मानते थे। पर, **इतना ही कि– बहुत अच्छे साधु हैं , बड़े भले साधु हैं - जो कहें वो करते हैं।** मैंने देखा भी था कि सब संतों के साथ उनका एक सरीखा आसन था ! **काकाजी ने बिगुल बजाया कि यह कोई अलग चीज़ है, इनका आसन अलग होना चाहिए !** और आज हम जैसे छोटे-छोटे संत भी बड़े-बड़े आसन पर बैठते हो गए। वो महिमा की देन काकाजी की है। आसन से कोई बड़प्पन है यूं नहीं समझना। लेकिन **काकाजी एक जौहरी थे। इन्होंने ऐसे सबको परखे और हमें इनकी पहचान करवाई...**

जो प्रभु की हमें मानवस्वरुप में पहचान हुई, वो हमारे सारे कर्ता-धर्ता हैं। **जिसको ऐसी प्रभु की प्राप्ति हुई हो वो निर्भय और निश्चिंत रहेगा..**

एक बात खूब समझना... आज ये बातें कोई मानने वाला नहीं है। पर, **भारत का भावि खूब उज्जवल है। भारत एक ऐसा देश है जो आगे जाकर सारी दुनिया को लीड करेगा।** कुछ भी हो-मैं छोटा था तब से मुझे एक गौरव था कि भारत में मेरा जन्म हुआ है। तब मुझे पता नहीं था कि क्यों ऐसा भीतर में रहता है। आप लोगों को भी पता है कि भारत का नाम आते ही मेरा चेहरा बदल जाता है। अब पता लगता है कि भारत में प्रभु प्रगट हैं और वो हमारे 'मावतर' हैं– वो संबंध से ये चीज़ बनती होगी...

काकाजी के पास नए साल के दिन कोई भी जाता, तो उसे एक रुपये की– दो रुपये की नई कोरी नोट देते। **रुपया 'एक' ही था, पर बहुत बड़ी बरकत है।** गीता में लिखा हुआ है कि जहां धनुर्धारी अर्जुन है-पुरुषार्थ करने वाला धनुर्धारी बोला जाए, सोया हुआ नहीं ! फिलहाल तो सब सोए हुए रहते हैं। मैं कई बार बर्थ डे के ग्रीटींग के लिए किसी को फोन करता हूँ, तो **आप सोये हुए होते हैं !** कितने बजे ? **सुबह साढ़े नौ बजे !** मैं सोचता हूँ– ये **कैसे तरक्की करेंगे ? कैसे** इनके **जीवन में समृद्धि आएगी ?** आज ये **मल्कानी साहेब** को हम इतनी ऊँचाई पर देखते हैं। लेकिन मैंने इनकी कहानी-दास्तां सुनी है। सुबह चार बजे - साढ़े चार बजे - पाँच बजे साईकिल पर घर से निकल फैक्टरी खुलवाने के लिए या नई शिफ्ट एरेन्ज करने के लिए रोज़ फैक्टरी पर जाते थे और वह भी जाड़े के दिनों में ! अब तो ठण्डी कम पड़ती है, वो जब जाते होंगे– सीक्सटीझ की बात करता हूँ– तब तो कैसी – कड़ाके की ठण्ड पड़ती थी, दिल्ली वाले जानते हैं। तब जाकर आज ये बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ - कोठियाँ - फार्म हाऊस हैं। हम ख़्वाब वो करेंगे, लेकिन नौ बजे हमें उठाने के लिए माँ आएगी। अरे ! माँ की क्या बात करें ? कई माँएं भी सोई पड़ी रहती हैं।

नए साल के दिन और कोई बात नहीं करनी है। **आप एक नियम लेकर के जाओ कि सुबह सा**
पाँच और पौने छः के बीच तो हम उठ जाएं। भजन करें, पुरूषार्थ करें.......

तुम्हारे साथ प्रभु तो हैं– मानवस्वरूप में ! काकाजी के रूप में, पप्पाजी के रूप में, स्वामिजी के रूप में। तो गीता का वो श्लोक– जहां धर्नुधारी अर्जुन है, जहां योगेश्वर कृष्ण हैं वहां विजय है, श्री है, कीर्ति है। **हर एक को ये तीन चीज़ चाहिए – विजय चाहिए, कीर्ति चाहिए, श्री चाहिए। हमें प्रभु का संबंध तो मिला हुआ है, लेकिन पुरुषार्थ तो करना पड़े...** सब के कन्ट्रोलर - नियामक प्रभु हैं– यूं दिल से मानें। **'प्रभु पल में चाहें सो करें'– ये निष्ठा हमें रखनी होती है।** भेदभाव– जैसे यह अख़्तर ने बोला, हिन्दु-मुसलमान का भेदभाव नहीं रखना है, हम सब प्रभु के बंदे है। 'मिलजुलकर'– बोलते हैं, लेकिन बहुत कठिन चीज़ है। **हम मिलजुल कर नहीं रह सकते। डायरेक्टली-इनडायरेक्टली लॅगपुलिंग करते रहते हैं। मिलजुल कर रहने का मतलब एक - दूसरे के पूरक बनकर रहें।** हरीफ बनकर - कोम्पीटीटर बन कर नहीं, एक - दूसरे के पूरक बनकर काम करें। **ये आज वक्त का तकाज़ा है कि हम हर एक एक - दूसरे के पूरक बनकर काम करें।** परसों जो घटना बनी है (अंसल प्लाज़ा वाली); दिल्ली पुलिस इतनी जाग्रत ना होती, तो दिल्ली की ये दीवाली होली बन जाती। अगर इनको मौका मिल जाता तो कम से कम तीन सौ - चार सौ लोग मारे जाते और हमारे चेहरे जो इतने खुश - खुशहाल दिखाई पड़ते हैं, वैसे आज हम नहीं बैठ पाते। ये प्रभु ने रक्षा करी ! हम बोलते हैं लेकिन मानते नहीं हैं। हम मानते हैं कि कुछ-कुछ तो अपने कारण हुआ होगा। कर्ण व अर्जुन की बात हर एक कोई जानता है। कर्ण और अर्जुन की जब आपसी लड़ाई हुई, तो अर्जुन ने बाण लगाया और कर्ण का रथ एक फर्लांग तक पीछे हट गया। फिर कर्ण ने बाण लगाया, तो अर्जुन का रथ सिर्फ एक गिट्टी पीछे हट गया था। कृष्ण तो आगे ही बैठे थे ना ? वो बड़े नटखट थे। अर्जुन के अहम् को उधेड़ने के लिए वे बोले– 'शाबाश कर्ण' ! अर्जुन को बड़ा हर्ट हो गया। अर्जुन क्या हर्ट हुआ ? **उसका अहंकार हर्ट हुआ।** तो बोला– 'प्रभु...!' फिर कृष्ण ने कहा अरे ! अर्जुन– त्रिलोकी का बोझ लेकर मैं बैठा हूँ, तब भी एक गिट्टी हट गया, अगर मैं नहीं होता तो कहीं उड़ जाता हवा में तेरा रथ !

मैं यह सोचता हूँ कि **अर्जुन के प्रति कृष्ण को कितना प्रेम होगा ? उसे अहंकार में झूलने नहीं दिया। पर, हमारे साथ जब ऐसी घटना बनती है,** तो **हम मायूस हो जाते हैं कि प्रभु हमारा तो तनिक भी स्टेटस रहने नहीं देते–हमारी तो कोई गिनती रहने ही नहीं देते।** काकाजी कहते-मर कर जीओगे, तब प्रभु को पाओगे। मर कर मरना नहीं है, मर कर फिर जीना है-एक दिव्य जीवन जीना है। लेकिन पहले मरना पड़ता है। पर, ये बहुत कठिन चीज़ है। अर्जुन के प्रति कृष्ण के लगाव की तो कोई सीमा ही नहीं थी। एक बार किसी कारण इन्द्र कृष्ण पर बड़ा खुश हो गया। जानता भी था कि कहाँ कृष्ण-कहाँ मैं ? फिर भी इन्द्र ने कृष्ण को कहा कि प्रभु मैं आप पर बड़ा खुश हुआ हूँ-कुछ माँगो। आप जो माँगोगे, वो मैं दे दूँगा। मतलब था– मैं आपकी सेवा करूँगा। तो **कृष्ण ने क्या माँगा** ? वे कहते हैं कि मुझे ऐसे आशीर्वाद दो कि **अर्जुन के प्रति जो मेरी प्रीति है, वो कायम रहे।** अरे ! **ये तो अर्जुन को कभी माँगना चाहिए था कि कृष्ण के प्रति जो मेरी है वो कायम रहे।** यहां भी हमारा सड़ा हुआ दिमाग यही सोचता है कि बड़े ऐसी ही बातों से अपना बड़प्पन बढ़ाते हैं ! पर, **ऐसी विभूति के दिल में झाँक कर देखेंगे तो– हमारे सिवा वहां कोई चीज़ नहीं मिलेगी। ऐसे संत के दिल में झाँक कर देखेंगे, तो वहां उनके मुक्तों के सिवा कोई चीज़ नहीं होगी।** ये असली संत का लक्षण है। **ऐसे संतों की परंपरा हमें मिली हुई है।** सो, हमें तो खुश रह कर आनंद करना है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय !

– प.पू. गुरुजी (ध्वनिमुद्रण से संकलित)

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	30.11.2002,	शनिवार	–	एकादशी, व्रत
(2)	दि.	15.12.2002,	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(3)	दि.	16.12.2002,	सोमवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(4)	दि.	30.12.2002,	सोमवार	–	एकादशी, व्रत
(5)	दि.	14.1.2003,	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत, मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त
(6)	दि.	18.1.2003,	शनिवार	–	पोषी पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी दीक्षा दिन

R.N.I. 28971/ 77

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months from January
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5950443
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi